REET 2025 LEVEL-1 & 2

वंदन बैच

हिंदी

भाषा दक्षता का विकास

Part -2

LIVE 03-01-2025 11:00 AM

ब्राह्मी - देवनागरी लिपि

बाएं से दाएं ↳ बाएं से दाएं

9810489147

स्वर | व्यंजन

लिपि व वर्तनी का सही ज्ञान:

लिपि- भाषा को दृश्य रूप में स्थायित्व प्रदान करने वाले वर्ण-प्रतीकों की परम्परागत व्यवस्था को 'लिपि' कहते हैं। लिखित भाषा लिपि संकेतों की व्यवस्था का व्यावहारिक रूप है। लिपि व्यवस्था भाषा को स्थायित्व और मानकरूप देने और उसे विकसित करने में अपनी अहम भूमिका निभाती है।

वर्तनी - पारंपरिक रूप से हम जिस प्रक्रिया या व्यवस्था द्वारा भाषा के ध्वन्यात्मक रूप को लिखित रूप देते हैं उसे 'वर्तनी' कहा जाता है।

- (1) विद्यार्थियों की वर्तनीगत अशुद्धियों का चयन और वर्गीकरण।
- (2) अशुद्धियों के निराकरण के लिए अपेक्षित उपायों का निर्धारण तथा अभ्यास।
- (3) व्याकरण संबंधी नियमों की जानकारी दी जानी चाहिए।
- (4) वर्तनी कोश का प्रयोग- कक्षा स्तर के अनुसार कक्षा वर्तनीकोश बनाया जाए।
- (5) सावधानी से पठन सामग्री पढ़ने का अभ्यास- विद्यार्थियों से कहा जाए कि वे जिस पुस्तक को भी पढ़ें, वर्तनी की दृष्टि से भी शब्दों को सावधानी से पढ़ें।

- **शब्द भंडार व शब्द रचना का ज्ञान :** ऐसे ध्वनि समूह को शब्द कहते हैं, जिससे किसी अर्थ की अभिव्यक्ति होती हो। शब्द किसी न किसी वस्तु, भाव या विचार का प्रतीक होता है। प्रयोग और अर्थ की दृष्टि से वह भाषा की लघुत्तम सार्थक इकाई है। जिस विद्यार्थी के पास जितनी अधिक शब्द संपदा होती है, वह उतनी ही जल्दी और अच्छी, तरह विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

शब्द

- **शब्द भंडार में वृद्धि के निम्न उपाय किये जा सकते हैं-**
- **शब्दकोश का प्रयोग** - शब्द भंडार में वृद्धि तथा शब्दों के अर्थ का पता लगाने के लिए उस भाषा के शब्दकोश का प्रयोग आवश्यक होता है। अतः शब्द का अर्थ समझने में कठिनाई होने पर विद्यार्थियों को शब्दकोश देखने के लिए प्रोत्साहित

स्वयं अध्ययन के लिए

- **विद्यार्थियों को स्वाध्याय के लिए प्रेरित करना:** विद्यार्थी जितना अधिक पढ़ता है, उतना ही उसका शब्दज्ञान बढ़ता है। पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अन्य रुचिकर और ज्ञानवर्धक पुस्तकें, पत्र- पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए और पठन रुचि का विस्तार करना चाहिए। इससे विविध विषयों से संबंधित शब्दावली का ज्ञान होता है।

नकल करके सीखना

- **शिक्षक का आदर्श:** शिक्षक द्वारा प्रयुक्त भाषा का अनुकरण करने में विद्यार्थी प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। अतः शिक्षक को अपनी बातचीत, व्याख्या और शिक्षण कार्यों के समय अच्छी शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए।

- **शब्द संग्रह की प्रवृत्ति का विकास:** विद्यार्थियों में विविध विषयों से संबंधित आवश्यक शब्दों की सूची तैयार करने की प्रवृत्ति विकसित करनी चाहिए जिससे उनके शब्द भंडार व ज्ञान में वृद्धि हो।

जो चल सके

- **मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग :** भाषा को सशक्त, सजीव और प्रभावपूर्ण बनाने की दृष्टि से मुहावरों और लोकोक्तियों का महत्वपूर्ण स्थान है। ये जनसामान्य के कंठ में बसी हुई भाषा में इस तरह घुले-मिले होते हैं कि उनके प्रयोग से व्यक्ति कोई भी बात सहज ही समझ लेता है और आनंद विभोर हो उठता है। इनके प्रयोग से अधिक से अधिक भावों को सहजता के साथ व्यक्त किया जा सकता है। अतः विद्यार्थियों को अपनी भाषा में मुहावरों और

लोकोक्तियों के यथोचित प्रयोग के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करना चाहिए। मुहावरा एक वाक्यांश या पदबंध होता है। जब कोई वाक्यांश अपने शाब्दिक अर्थ को छोड़कर किसी लाक्षणिक अर्थ को प्रकट करता है, तब उसे मुहावरा कहते हैं। यह अपना अर्थ स्पष्ट करने के लिए वाक्य पर आश्रित होता है। वाक्य से अलग उसके स्वतंत्र रूप का कोई अर्थ नहीं है। जैसे- 'उसने अपना पेट काटकर अपने लड़के को पढ़ाया'। यहाँ 'पेट काटना' मुहावरा है जिसका वाक्य से अलग कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं है। लोकोक्तियाँ मुहावरों की तरह वाक्य का अंग नहीं बनती हैं वरन् वे प्रायः पूर्ण वाक्य होती हैं, जैसे "कोयल होय न ऊजली, सौ मन साबुन लाय"।

- व्याकरण शिक्षण के समय- व्याकरण शिक्षण में शुद्ध वाक्य रचना के प्रयोग और अभ्यास का यथेष्ट अवसर मिलता है। प्रारंभिक स्तर पर यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों द्वारा प्रयुक्त वाक्यों में स्थानीय बोलियों के प्रभाव से अथवा अन्य कारणों से जो दोष या अशुद्धियाँ हों, उन्हें दूर किया जाए और शुद्ध वाक्य रचना एवं प्रयोग की आदत विद्यार्थियों में डाली जाए। इस दृष्टि से निम्नलिखित प्रकार के अभ्यास विशेष उपयोगी सिद्ध होंगे-

  - वाक्य में शुद्ध पदक्रम संबंधी अभ्यास।

- कर्त्ता-क्रिया, कर्म-क्रिया, संज्ञा-सर्वनाम, विशेष्य-विशेषण आदि की सही अन्विति के अभ्यास।
- अपूर्ण वाक्यों को पूरा कराना, रिक्त स्थानों की पूर्ति आदि।
- दिए गए वाक्य में अशुद्ध शब्द को रेखांकित करवाना और उनके स्थान पर शुद्ध शब्द का प्रयोग करवाना।
- शब्दों को एक वचन से बहुवचन एवं बहुवचन से एक वचन में परिवर्तित कराते हुए वाक्य रूपांतरण के अभ्यास।
- काल परिवर्तन द्वारा वाक्य रूपांतरण।

- विभक्ति परिवर्तन द्वारा वाक्य रूपांतरण।
- कर्त्ता अथवा कर्म की स्थिति में परिवर्तन।
- संयुक्त क्रियाओं के प्रयोग संबंधी अभ्यास।
- संयुक्त एवं मिश्र वाक्यों की विविध रूपों में रचना के अभ्यास।
- अर्थ की दृष्टि से अस्पष्ट और दोषपूर्ण वाक्यों को शुद्ध करने के अभ्यास। विद्यार्थियों द्वारा होने वाली वाक्य रचना संबंधी त्रुटियों का संकलन एवं उनके आधार पर त्रुटि-निवारण के लिए और भी अभ्यास कराए जा सकते हैं।

- **विराम चिह्नों का प्रयोग:** लिखित भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए वाक्यों में जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं। विराम का शाब्दिक अर्थ है- ठहराव। लेखक लिखते समय अपने भावों और विचारों को सुगम और सुबोध बनाने के लिए विराम चिह्नों का प्रयोग करता है। इससे वाक्य रचना और भावाभिव्यक्ति में स्पष्टता आ जाती है।
- जिस प्रकार बोलने में प्रश्न करते समय, आदेश देते समय, संबोधित करते समय, विस्मय प्रकट करते समय अपनी वाणी में उतार-चढ़ाव, बल, अनुतान, उच्च या मंद स्वर का सहारा लेते हैं, उसी प्रकार लेखन में अपने भाव प्रकाशन के लिए

विराम चिह्नों का प्रयोग करते हैं। विद्यार्थियों को इन विराम चिह्नों के प्रयोग से भली-भाँति अवगत करा देना चाहिए।

हिंदी में प्रचलित प्रमुख विराम चिह्न निम्नलिखित हैं-

- पूर्ण विराम (।)
- अल्प विराम (,)
- अर्द्ध विराम (;)
- प्रश्न सूचक (?)
- विस्मयादिबोधक या संबोधन सूचक (!)

- निर्देशक (डैश) (—)
- योजक (-)
- अवतरण या उद्धरण चिह्न (“.........”)
- कोष्ठक ( )
- विवरण चिह्न (:-)
- हंसपद (^)